जया खुलासा

श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल की गैर कानूनी जमीन को लीज पर देने की हुई थी कोशिश

तहसीलदार की जांच रिपोर्ट और एसडीएम का पत्र सामने आया, कन्हैया लाल खत्री ने रोशनलाल गेरा की शिकायत की थी

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबादः तिकोना पार्क स्थित बंद पड़े श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल में चल रहा विवाद खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। पुराने दस्तावेजों से एक पत्र बरामद हुआ, जिससे पता चलता है कि कन्हैया लाल खत्री ने अस्पताल से जुड़ी दुकान के मामले में अमानत में खयानत भांपते हुए तहसीलदार फरीदाबाद को रोशनलाल गेरा के खिलाफ शिकायत दी थी। एसडीएम फरीदाबाद ने कोतवाली के एसएचओ को इस मामले में एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया था। इस बीच इस अस्पताल का नाम श्रीराम के ही नाम पर क्यों रखा गया, इस बारे में भी दिलचस्प तथ्य सामने आए हैं।

खत्री की विस्फोटक शिकायत

समाजसेवी कन्हैया लाल खत्री की छवि अच्छी रही है और इस अस्पताल को खड़ा करने में बृज मोहन भाटिया के साथ-साथ उनकी भी भूमिका रही है। मजदूर मोर्चा शुरू से ही इस बात को लिख रहा है कि तिकोना पार्क में जिस जगह यह धर्मार्थ अस्पताल और इससे जुड़ी दुकान है, उसे लेकर कुछ लोगों की नीयत खराब रही है।

इस दस्तावेज के मुताबिक, 2012 में श्रीराम चेरिटेबल सोसायटी के संस्थापक सदस्य कन्हैया लाल खत्री ने रोशन लाल गेरा के खिलाफ शिकायत जिला प्रशासन के पास की। इस शिकायत पत्र में कहा गया था कि तिकोना पार्क में ट्यूबवेल नंबर 2 पर एक अस्पताल और एक दुकान सरकारी जमीन पर गैरकानूनी ढंग से बनी हुई है। लेकिन रोशन लाल ने इस जमीन की लीज (डीड नंबर 15713) 29 दिसम्बर 2011 को पलवल के एक शख्स के नाम लिख दिया था। रोशन लाल गेरा उस समय प्रधान थे।

कन्हैया लाल खत्री की इस शिकायत पर जिला प्रशासन ने तहसीलदार फरीदाबाद को जांच सौंपी। तहसीलदार मौके पर पहुंचे और मुआयना किया। तहसीलदार ने अपनी जांच रिपोर्ट में लिखा कि रोशन लाल गेरा ने बिना सरकारी अनुमति सरकारी जमीन की लीज दूसरे शख्स के नाम लिख दी, जो गैरकानूनी और धोखाधड़ी है। इस रिपोर्ट के आधार पर एसडीएम फरीदाबाद ने कोतवाली पुलिस को एफआईआर करने का निर्देश दिया। रोशन लाल गेरा चूंकि रसूख वाले थे, इसलिए उन्होंने पुलिस की कार्रवाई नहीं होने दी, लेकिन इससे श्रीराम चेरिटेबल सोसायटी में गांठ पड़ गई। रोशन लाल गेरा का ऐसा चेहरा सामने आया, जिसकी कल्पना किसी ने नहीं की थी। हालांकि रोशन लाल गेरा इस अस्पताल और सोसायटी को खड़ा करने में दिलोजान से आगे-आगे रहे। इसका संविधान तक उन्होंने बनाया, लेकिन अमानत में खयानत

ने उनकी छवि को नष्ट कर दिया। लेकिन उनकी सेवाओं की वजह से ये बातें रफा-दफा हो गईं।

कंवल खत्री की मिलकियत

बृज मोहन भाटिया इन हालात से काफी दुखी थे। गुटबाजी ने उनको झकझोर दिया। इसके बाद कंवल खत्री ने अपनी गोटियां बिठानी शुरू कर दी। कंवल खत्री के पदार्पण के बाद अस्पताल खत्री परिवार की जायदाद के नाम पर शहर में मशहूर हो गया। इस बात के कई गवाह मौजूद हैं, जब एक नंबर में आयोजित एक सामाजिक कार्यक्रम में तत्कालीन मंत्री महेन्द्र प्रताप सिंह आये। वहां श्रीराम धर्मार्थ सोसायटी के लोग भी मौजूद थे। उन्होंने महेन्द्र प्रताप से आग्रह किया कि वे अभी श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल भी चलें। महेन्द्र प्रताप ने उन लोगों से कहा कि वही अस्पताल ना जो कंवल खत्री बना रहा है। श्रीराम सोसायटी के लोगों के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। उनके कान खड़े हो गए। यहां यह उल्लेख करना भी जरूरी है कि उस समय तक महेन्द्र प्रताप नेता से बिजनेसमैन भी बन चुके थे और सैनिक कॉलोनी और मानव रचना के संस्थापक डॉ. ओ. पी. भल्ला कई प्रोजेक्ट में उनके पार्टनर भी रहे, यानी इसे बताने का लब्बोलुआब यह है कि उस समय महेन्द्र प्रताप को पंजाबी बिरादरी की तमाम गतिविधियों की जानकारी रहती थी।

श्रीराम नाम ही क्यों पड़ा

मजदूर मोर्चा के पिछले अंक में श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल की अहम कड़ी एस.एम. हाशमी की दास्तान प्रकाशित की गई थी, लेकिन वो दास्तान अभी पूरी नहीं हुई है। मजदूर मोर्चा ने एस.एम. हाशमी से पूछा कि उन्होंने और बृज मोहन भाटिया ने इसका नाम नाम ही क्यों रखा। हाशमी ने जो बताया वो बहुत दिलचस्प है और उससे पता चलता है कि भारत में धर्मनिरपेक्षता की जड़ें कितनी मजबूत हैं।

एसएम हाशमी एसी नगर में हाजी शब्बन के नाम से भी मशहूर हैं। इस मलिन बस्ती में गुर्जर चौक के पास जिस संकरी गली में हाशमी रहते हैं, वहां हाजी शब्बन का नाम लेकर ही पहुंचा जा सकता है। जब एसी नगर पूरी तरह आबाद नहीं हुआ था, तो एक बड़ी जगह में हाजी शब्बन रामलीला कराया करते थे। उसमें जो भी पैसा खर्च होता, उसे वही देते थे। दरअसल, उस इलाके में यूपी-बिहार की बड़ी आबादी रहती है। ज्यादातर लेबर क्लास के लोग हैं। वे लोग उस समय तक समाजसेवी का अवतार ले चुके हाशमी से अक्सर कहते कि जब वे अपने गांवों या कस्बों में थे, तो वहां रामलीला होती थी। हाजी शब्बन ने उनकी इस बात को समझते हुए दशहरा पर रामलीला आयोजित करना शुरू कर दिया। यह सिलसिला कई साल चलता रहा। लेकिन उसी दौरान हालात कुछ ऐसे बदले कि उस इलाके में बीमारी फैलने पर रामलीला का आयोजन नहीं हो सका। लेकिन ठीक अगले साल ही वहां एक दबंग शख्स चौधरी बनने के चक्कर में आया और उसने यूपी-बिहार के लोगों का ज्यादा मनोरंजन करने के चक्कर में महिलाओं का नाच-गाना शुरू करा दिया। हाशमी ने इसका विरोध किया। उन्होंने कहा कि जिस जगह रामलीला होती हो, वहां नाच-गाना नहीं होना चाहिए, लेकिन उस दबंग चौधरी के आगे उनकी एक न चली। लेकिन हाशमी को इससे सदमा पहुंचा और अकेले पड़ने पर उन्हें इसका बहुत अफसोस हुआ। उन्होंने तिकोना पार्क में अपनी दुकान और काम पर ध्यान देना शुरू कर दिया। इधर, रामलीला की जगह नाच-गाना चलता रहा।

हाशमी कहते हैं कि जिन्दगी की रफ्तार ऊपर वाले के रहमोकरम पर होती है। नाच-गाना कराने वाले दबंग चौधरी के घर आफतों का पहाड़ टूट पड़ा। उसके परिवार में मौतें होने लगीं। उसे अपनी जमीन, घर सब बेचकर उस बस्ती से जाना पड़ा। अंत में उसकी भी मौत हो गई। हाशमी का कहना है कि जिसने रामलीला बंद कराकर नाच-गाना कराया था, मेरा मानना है कि उसकी जिन्दगी इसी वजह से बर्बाद हो गई। मुझे यह घटनाक्रम आज तक याद है। इसीलिए जिस तिकोना पार्क के ट्यूबवेल वाली जगह पर वो सब्जी बोते थे, और जब वहां अस्पताल बनाने की बात आई तो उन्होंने आटोमोबाइल एसोसिएशन के प्रधान बृज मोहन भाटिया को अस्पताल और सोसायटी का नाम श्रीराम के नाम पर रखने का सुझाव दिया, जिसे बृज मोहन भाटिया ने फौरन ही मान लिया।

वह कहते हैं कि दरअसल हम लोग इसे डिस्पेंसरी बनाना चाहते थे, लेकिन जिस पेंटर को वहां श्रीराम धर्मार्थ डिस्पेंसरी लिखने के लिए बुलाया था, उसने गलती से डिस्पेंसरी की जगह अस्पताल लिख दिया। हम लोग दुकान के काम में जुटे थे, ध्यान नहीं दे पाए। लेकिन शाम को जब मैं और प्रधान जी (बृज मोहन भाटिया) वहां पहुंचे तो अस्पताल लिखा देखकर हैरान रह गए। फिर हम लोगों ने तय किया कि जब अस्पताल लिख दिया है, तो अब इसे वापस डिस्पेंसरी नहीं लिखवाना है। ...और सचमुच वह डिस्पेंसरी अस्पताल में बदल गई। हाशमी इसकी वजह श्रीराम नाम को ही मानते हैं। उनका कहना है कि इस नाम में जरूर कुछ है, वरना मोटर-गाड़ी बनाने वाले कब अस्पताल खड़ा कर सकते थे।

हाशमी ने इस मामले में हरियाणा के मंत्री ओ.पी. महाजन को भी याद किया। जिनके पास वह एसी चौधरी और एसी सेठी के जरिए पहुंचे थे। ओपी महाजन ने बतौर मंत्री इस अस्पताल के लिए काफी सरकारी मदद की।

ताजा अपडेट

इस मामले में रजिस्ट्रार सोसायटीज लगातार तारीख पर तारीख दे रहा है। 13 अप्रैल 2021 को इसकी सुनवाई होनी थी। लेकिन फिर 15 अप्रैल की तारीख लगा दी गई। 15 अप्रैल को भी सुनवाई नहीं हुई और अब अगली तारीख 15 मई लगाई गई है। देश के तमाम इलाकों की तरह फरीदाबाद में भी कोराना बढ़ रहा है। ऐसे समय में इस अस्पताल की ज्यादा जरूरत है, लेकिन लगता है कि रजिस्ट्रार सोसायटीज के बेईमान अफसर मामले को जल्द से जल्द हल करने को राजी नहीं हैं। अगर रजिस्ट्रार दफ्तर इसका फैसला जल्द कर देता है तो इस अस्पताल की सेवाएं कोविड मरीजों को भी मिल सकती हैं। लेकिन लकवाग्रस्त शहर के नेताओं, समाजसेवियों, अफसरों की इसकी जरा भी चिन्ता नहीं है। रजिस्ट्रार सोसायटीज का इस मामले में कोई फैसला न लेना और मामले को लटकाना कई सवाल खड़े कर रहा है। अभी तक उसने निलंबित प्रधान कंवल खत्री से सारे दस्तावेज भी अधिकृत रूप से जमा नहीं कराये हैं। रजिस्ट्रार सोसायटीज को अब कोई भी फैसला लेने से पहले एस.एम. हाशमी को भी पक्षकार बनाना पड़ेगा और सुनना पड़ेगा, क्योंकि हाशमी अब अदालत से केस जीत कर आये हैं।

इस बीच भाटिया सेवक समाज जो पंजाबी बिरादरी के अंदर ही इस मामले को सुलझाने के लिए आगे आया था, वह दूसरी बैठक नहीं बुला पाया। हालांकि, सभी पक्ष बिरादरी के अंदर ही सुलझाने के लिए राजी हैं, लेकिन अहम का टकराव उन्हें पीछे धकेल देता है।

देखी-सुनी

खबरीलाल

ऑनलाइन क्लास के बावजूद यूनिफॉर्म का संदेश

फरीदाबाद समेत देशभर में स्कूल माफिया कैसा काम करता है, उसकी ताजा झलक देखिए। सेक्टर 9 में मल्होत्रा बुक सेंटर है। ये धंधेबाज स्कूलों में कॉपी-किताब, यूनिफॉर्म का ठेका लेता है। स्कूल वाले भी उसी के यहां से खरीदने के लिए अभिभावकों पर दबाव डालते हैं, ताकि उन्हें कमीशन मिलता रहे। कोरोना के दौर में जब सभी क्लास आनलाइन चल रही है, ऐसे में मल्होत्रा बुक सेंटर ने 14 अप्रैल को

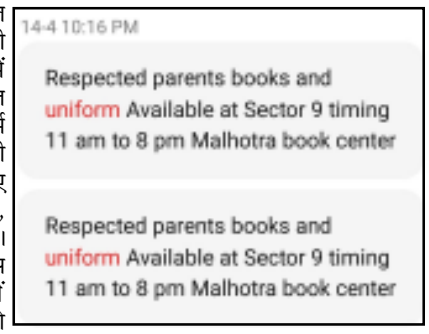

ढेरों अभिभावकों को फोन किया कि उनकी सेक्टर 9 की दुकान सुबह 11 से रात 8 बजे तक खुली रहेगी। वे लोग कॉपी-किताब और यूनिफॉर्म वहां से ले लें। लूट खसोट के लिए बदनाम हो चुके डीएवी स्कूल सेक्टर 14 में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों को ऐसे एसएमएस मिले। स्पष्ट है कि अभिभावकों के मोबाइल नंबर डीएवी स्कूल वालों ने ही मल्होत्रा बुक सेंटर को दिए होंगे। अन्यथा किताब बेचने वाले के पास इतनी बड़ी तादाद में अभिभावकों के मोबाइल नंबर कैसे आ सकते हैं। यह स्थिति बहुत खतरनाक है। अगर स्कूल ही अभिभावकों का प्राइवेसी डेटा बेचने लगेंगे तो बाकी संस्थान क्या नहीं करते होंगे। अभिभावकों की एकजुटता ही स्कूलों और दुकानों की धंधेबाजी और डेटा चोरी पर रोक लगा सकती है। अभिभावक चाहें तो एफआईआर भी करा सकते हैं, तब पुलिस को जांच करनी पड़ेगी कि आखिर दुकान वाले के पास अभिभावकों के मोबाइल नंबर कैसे पहुंचे।

विज कहना क्या चाहते हैं

हरियाणा के गृह मंत्री निराले हैं, कुछ भी बोल सकते हैं। हाल ही में अखबारों और टीवी पर लखनऊ और भोपाल की कुछ तस्वीरें सामने आईं जिनमें सैकड़ों चितायें श्मशान घाट में एकसाथ जल रही हैं। कुछ शव श्मशान में ऐसे ही पड़े हैं, जिन्हें कोई जलाने वाला नहीं है। इन तस्वीरों से देश कांप उठा। इन दोनों राज्यों यूपी और एमपी में भाजपा की सरकारें हैं। जो कोरोना मरीजों की संख्या छिपाने के लिए बदनाम हो चुकी हैं, लेकिन श्मशान घाट में चिता की तस्वीरों ने उनका राज खोल दिया। हरियाणा के गृह मंत्री अनिल विज ने ट्वीट किया कि हरियाणा में सख्ती का आदेश दिया गया है। वह लोगों की नाराजगी झेल लेंगे लेकिन लाशों का ढेर नहीं देख सकते। विज के इस ट्वीट से अप्रत्यक्ष रूप से यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ और एमसी के सीएम शिवराज सिंह की ही आलोचना हो गई। भाजपा के जिस भी नेता या एमपी-एमएलए ने वह ट्वीट देखा, उसका बुरा माना कि अपनी सरकारों की आलोचना क्यों हो रही है। लेकिन विज को समझाने की पहल कौन करे। कम से कम सीएम मनोहर लाल खट्टर तो यह पहल नहीं करना चाहते हैं।

उमर खालिद के लिए आरोग्य सेतु क्यों

जेएनयू के पूर्व छात्र नेता उमर खालिद को दिल्ली की एक अदालत ने जमानत दे दी है। उन पर फर्जी तरीके से कथित देशद्रोह का आरोप दिल्ली पुलिस ने लगाया था। लेकिन जमानत देते हुए जज साहब ने शर्त लगा दी है कि उमर खालिद को अपने मोबाइल पर आरोग्य सेतु ऐप डाउनलोड करनी होगी।...पाठकों को याद होगा कि आरोग्य सेतु अनिवार्य किए जाने पर कितना शोर मचा था और मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचा था। तब सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि सरकार आरोग्य सेतु को अनिवार्य नहीं कर सकती। दरअसल, आरोग्य सेतु के जरिए आपकी प्राइवेसी पर नजर रखने और डेटा डायवर्ट करने का आरोप लगा था। कुछ हैकर्स ने इसे बाकायदा करके दिखाया था। इसके बाद सरकार भी इसे अनिवार्य किए जाने के आदेश से पीछे हट गई। लेकिन ताज्जुब है कि दिल्ली की अदालत को आरोग्य सेतु से जुड़े विवादों की सूचना नहीं है और जज साहब ने उमर खालिद को इसे अपने मोबाइल में डाउनलोड करने को कह दिया।

फरीदाबादी पत्रकारों का पावर प्ले

पत्रकार रात-दिन नेताओं के बारे में लिखते रहते हैं कि फलां नेता दलालों और चापलूसों से घिरा है। लेकिन कभी अपने गिरेबान में नहीं झांकते। फरीदाबाद में अब हर ईंट के नीचे से एक पत्रकार निकल रहा है। हुआ यह कि पिछले दिनों शहर में एक पुराने पत्रकार को सम्मानित किया गया। इसके बाद उसी पत्रकार ने अपने घर पर एक केन्द्रीय मंत्री को भी बुला लिया। उस पत्रकार ने दोनों अवसरों की फोटो सोशल मीडिया पर जारी कर दी। इसमें कोई बुराई नहीं है। लेकिन हिन्दूवादी अखबार से जुड़े एक पत्रकार जो आजकल राज्य स्तरीय पत्रकारिता करने का दावा करते हैं, ने भी अपने घर किसी वीआईपी को बुलाने के लिए कोशिश शुरू कर दी। बिल्ली के भाग से छींका तब टूटा जब सेक्टर 10 में कांग्रेस दफ्तर पर हरियाणा कांग्रेस की अध्यक्ष कुमारी शैलजा और बाकी नेता एक कार्यक्रम में पहुंचे। पत्रकार ने इसे अवसर समझा और उन्हें अपने घर आमंत्रित कर लिया। लेकिन सोशल मीडिया पर आये फोटो पर अपनी टिप्पणी इस तरह पेश की, मानों प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष और बाकी नेता खुद चलकर उस पत्रकार के घर आये हों। उसने नेताओं के अपने घर पर आने का आभार जताया। कुछ कांग्रेसी नेताओं ने खबरीलाल को बताया कि हमारी पार्टी और नेताओं की कोई कवरेज करता नहीं है, ऐसे में अगर हमें कोई छुटभैया पत्रकार भी बुलाये तो हम उसके घर जाने में परहेज नहीं करते। बाकी पत्रकारिता का जो स्तर है, खासकर हिन्दूवादी अखबार की पत्रकारिता किस स्तर पर जा पहुंची है, वो किसी से छिपा नहीं है। बहरहाल, फरीदाबाद में पत्रकारों का पावर प्ले दिलचस्प दौर में है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06